Written by कुमार सौवीर
Monday, 18 June 2018 14:37

: □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□-□□□□□ : □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□-□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ : □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ : □□□□ □□□-□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : आप किसी भी बेईमान के पास जाइये। उसके आसपास चलिांडलुओं-तेलांडुओं की बाकायदा फौज दिखेगी, जबकि ईमानदार लोगों के चेहरे से तुनुकमिजाजी टप्□प-टप्□प चूती-टपकती रहती है। जिन्□हें औसत क्षमता-बुद्धि है, वे हमेशा प्रफुल्लित दिखेंगे। दौड़-दौड़ कर काम करने-कराने में महारत होगी उनमें। उनका □क औरा या प्रभा-मंडल होगा। उनके आसपास लोगों की भीड़ होगी, आने-जाने वाले को पुकारेंगे, लपिटेंगे, सम्□मान देंगे। तनकि बात पर भी वे सब □कमत हो जाते हैं बेईमान, साथी को संकट देखते ही वे □कजुट हो जाते हैं। भले वो ईमानदार हो या बेईमान। जबकि जिन्□हें आप क्षीर-विवेकी यानी पढ़े-लिखे मानते हैं, वे अक्□सर अक्□खड़, ऐंठू, घमण्□डी दिखेंगे। अक्□सर तो दूसरों को गरयिाते रहेंगे। गर्मजोशी कोसों दूर, दूसरों की ओर अपना हाथ ऐसे सौंपेंगे, कि वियाग्रा तक अपनी असफलता पर शर्मिंदा हो जा□। सरि्फ ज्ञान बघारेंगे, तुनुकमिजाजी टप्□प-टप्□प चूती-टपकती रहेगी।

आज यूं ही □क बहस में शामिल हो गया मैं। प्रश्□न था कि नीर -क्षीर विवेकी होना □ा किसी से अप्रभावित होना, आप को अकेला व नीरस बना सकता है? प्रश्□न के साथ ही समाधान भी देने की कोशिश की थी अवध बार □सोसयिेशन के पूर्व महामंत्री आरडी शाही ने। मैंने भी अपना ज्ञान छौंक कि नीर-क्षीर विवेकी होने का अर्थ कभी भी नीरस और अकेला कदापि नहीं हो सकता। जो तलछट तक के मर्म को समझने गया है, वह वापसी में अगर अकेला और नीरस बन गया, तो मैं नोटरी प्रमाणपत्र जारी करवा सकता हूं कि ऐसा व्□यक्ति रेन-कोट पहन कर स्□नान करने की कोशिश करता रहा है, और इस तरह अपने ऐसे स्□नान-कर्म से शुद्ध होने का भरम दूसरों पर थोपता रहा है। ऐसा व्□यक्ति नीर-क्षीर विवेकी कैसे हो सकता है? और अगर ऐसा दावा करने वाले ने स्□वप्□न में भी क्षीर को नहीं अपनाया, केवल भयभीत ही रहा है। ऐसे में तो दर्प-घमण्□ड की ही चट्टानी-फसल ही होगी। नीर-क्षीर विवेकी तो केवल वही हो सकता है जो जल के कण-कण-परमाणुओं तक पहुंचने के लि□ उत्□सुक हो, और उसी जिज्ञासा भाव में वहां गहरे तक पहुंच चुका हो। और यह अच्□छी तरह समझ चुका हो कि वह नीर-क्षीर के ऊपर नहीं, उसके जैसे असंख्□य तत्□वों में से □क है। ऐसे व्□यक्ति सरल, प्राणवान, जीवन्□त और सतत जिज्ञासु होगा, दर्प के विपरीत ध्रुव पर।

ज्ञानी लोग ऐसे हाथ मिलाते हैं कि वियाग्रा तक शरमा जाए

Written by कुमार सौवीर
Monday, 18 June 2018 14:37

[illegible]

2 / 2